❶ ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो वसून्याभर।।

– *अथर्ववेद 6/63/4*

हे परमेश्वर हमें धन-धान्य प्राप्त करावें।

O Lord ! Bestow upon us wealth & Prospevity.

वर्ष 41, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 मई, 2018 से रविवार 20 मई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-26-27-28 अक्टूबर, 2018 की तैयारियां

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत समस्त आर्य विद्यालयों की वार्षिक बैठक सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में होगी आर्य विद्यालयों की अहम् भूमिका– सुरेन्द्र रैली, प्रस्तोता

विद्यालयों के चेयरमैन होंगे आर्य महासम्मेलन विद्यालयी सम्बन्धी कार्य समिति के सदस्य

दिल्ली सभी विद्यालयों के प्रबन्धक होंगे आर्यमहासम्मेलन विद्यालयी कार्य प्रबन्ध समिति के सदस्य

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी के संयोजत्व में एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन समिति का गठन : दिल्ली के विद्यालयों के 4000 छात्र-छात्राएं करेंगे यज्ञ प्रदर्शन में भागीदारी

स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी ने किया दिल्ली में सम्पर्क अभियानों का शुभारम्भ

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की वार्षिक बैठक 10 मई 2019 को एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में श्री सत्यानन्द जी की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। इस बैठक में आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, महाशय धर्म पाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री सतीश चड्ढा, ए. के. धवन, अनु वासुदेव, उमाशशि दुर्गा, वीना आर्या, तृप्ता शर्मा एवं विभिन्न विद्यालयों के चेयरमैन, प्रबन्धक, प्रधानाचार्य व अध्यापक/ अध्यापिकाएं उपस्थित रहे।

बैठक का शुभारम्भ गायत्री मंत्र के साथ किया गया। श्रीमती तृप्ता शर्मा ने गत वर्ष की बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिस पर सभी ने अपनी सहमति देते हुए सम्पुष्टि की।

22 जुलाई 2017 को तालकटोरा स्टेडियम में हुए कार्यक्रम की सराहना की गई। कार्यक्रम का विषय 'आधुनिक भारत ले चलें शिखर की ओर' की विषय वस्तु बच्चों का प्रस्तुतिकरण सराहनीय था।

परिषद द्वारा प्रकाशित होने वाली स्मारिका लगभग तैयार है। सभी विद्यालयों को उनके लेख, विद्यालय से सम्बन्धित विषय सामग्री दिखा दी गई है।

महामन्त्री श्री विनय आर्य ने कहा इस वर्ष 25, 26, 27, 28 अक्टूबर को दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हो रहा है। इसमें हमारे विद्यालयों का योगदान विशेष रहेगा। विर्ष 2012 के महासम्मेलन में भी आर्य विद्यालयों का योगदान सराहनीय था। मुख्य मंच के अतिरिक्त हाल नं. 9 में हमारे दिल्ली के आर्य विद्यालयों के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भारत के अन्य आर्य समाजों एवं विद्यालयों के कार्यक्रम भी सराहनीय थे। इस महासम्मेलन में भी इस प्रकार की व्यवस्था रहेगी। मुख्य मंच से भी सत्य एवं आर्य घटनाओं पर आधारित नाटिकाएं होंगी। इन सबके लिए अलग-अलग समितियों का गठन होगा।

प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली ने सम्बोधित करते हुए कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर सम्मेलन में विद्यालयों की भूमिका निश्चित करने के लिए विद्यालयी कार्य समिति जिसके सदस्य सभी विद्यालयों के माननीय अध्यक्ष महोदय होंगे तथा विद्यालयी कार्य प्रबन्ध समिति का गठन किया गया है जिसके सदस्य सभी विद्यालयों के माननीय प्रबन्ध महोदय होंगे। हत हमारे विद्यालयों पर भी भारी जिम्मेदारी है जिसे हम सबको मिलकर निभाना है।

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कहि कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी को महासम्मेलन के अवसर पर एकरूपीय यस प्रदर्शन समिति का संयोजक नियुक्त किया गा है।

एक रूप यज्ञ प्रदर्शन समिति के संयोजक श्री सतीश चड्डा जी ने कहा कि 4 हजार से अधिक छात्रों को यज्ञ शिक्षण दिया जाएगा। वे सभी आर्य महासम्मेलन में एक साथ बैठकर एकरूप यज्ञ प्रदर्शन करेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि 'इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए हमें मिलकर काम करना होगा' प्रधान जी द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया व बैठक शान्तिपाठ के साथ सम्पन्न हुई। – ***प्रस्तोता***

दिल्ली की भूमिका के लिए दिल्ली के प्रमुख आर्य संगठनों की बैठक सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान सुरेशचन्द्र आर्य, मन्त्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा प्रधान धर्मपाल आर्य एवं स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल ने किया सम्बोधित

दिल्ली सभा, केन्द्रीय सभा, दयानन्द सेवाश्रम संघ, प्रान्तीय आर्य महिला सभा, एवं सभी वेद प्रचार मंडलों – पूर्व, पश्चिम, उत्तर-पश्चिमी, दक्षिण दिल्ली के अधिकारीगण हुए शामिल : तन-मन-धन से सहयोग का पूर्ण आश्वासन

विस्तृत समाचार पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

देव का शासन

अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशद् व्रतानि देवः सविताभि रक्षते।
प्रास्राग् बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यो धृतव्रतो महा अज्मस्य राजति।। –ऋ. 4/53/4
ऋषिः **वामदेवः**।। देवता – **सविता**।। छन्दः – **स्वराड्जगती**।।

शब्दार्थ – **सविता देवः** = सर्व प्रेरक देव **भुवनानि प्रचाकशत्** = भुवनों को ज्ञान से प्रकाशित करता हुआ **अदाभ्यः** = अदम्य, न दबनेवाला होकर **व्रतानि**= संसार में अपने सत्यनियमों की, कानूनों की **अभिरक्षते** = पूरी तरह रक्षा कर रहा है। उसने **भुवनस्य** = संसार की **प्रजाभ्यः**= सब प्रजाओं के लिए **बाहू** = अपने बाहू **प्रास्राक्** = फैलाये हुए हैं, इस तरह वह **धृतव्रतः** = धृतव्रत होकर **महः अज्मस्य** = इस महान् जगत् पर **राजति** = राज्य कर रहा है।

विनय – सवितादेव के परम शासन को देखो! यह धृतव्रत देव इस महान् ब्रह्माण्ड पर कैसे शासन कर रहा है। यह देखो! इस 'अदाभ्य' सच्ची सरकार के कुछ सच्चे कानून हैं, व्रत हैं, जिन्हें कि कभी दबाया नहीं जा सकता। ये व्रत, नियम इस संसार में अखण्ड, अटल, परिपूर्ण रूप से चल रहे हैं। अपने इन व्रतों की सब भांति सतत रक्षा के लिए उसने इस विश्व के सब भुवनों को, सब क्षेत्रों को प्रकाशित किया है, ज्ञान-प्रकाश से युक्त किया है। बिना ज्ञान-प्रसार किये, बिना सत्य ज्ञान को आधार बनाये कोई भी नियम रक्षा नहीं पा सकता, नहीं चलाया जा सकता. और फिर उसका यह ज्ञान प्रसार भी इतना परिपूर्ण है तथा इतना प्रेममय और सर्वगत है कि उसने अपने इस ब्रह्मण्ड के राज्य की एक-एक प्रजा तक- एक-एक जीव तक अपनी ज्ञान-किरणों की प्रेममय बाहुओं को फैला रखा है और इन्हीं प्रेममय बाहुओं द्वारा वह प्रत्येक प्रजाजन के अन्दर घुसकर अपने विधान का पालन करवा रहा है, पर उसके ये व्रत जो इतने परिपूर्ण अखण्ड रूप से चल रहे हैं इसका सबसे बड़ा और मूल कारण तो यह है कि उसने स्वयं इन व्रतों को अपने में परिपूर्णतया धारा हुआ है, वह स्वयं धृतव्रत है। वह व्रतमय है। वह इन व्रतों का धारक महासूर्य है। हमें इस संसार में जो सत्य नियमों के रूप में ये व्रत दिखाई देते हैं वे तो उसी की किरणें मात्र हैं जो उस व्रत-महासूर्य से कोटि-कोटि प्रलयों तक, अनन्तकाल तक हम पर आती रहेंगी और हम जीवों को नित्य नया जीवन-ज्ञान और बल देती रहेंगी।

आओ, हम उसकी फैली हुई इन प्रकाशयुक्त प्रेममय बाहुओं का संस्पर्श सदा अनुभव करते रहें और उसकी प्यारी प्रजा बनी रहें।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आर्यसमाज द्वारा घोषित 'अंधविश्वास निरोधक वर्ष-2018'

क्या धर्म विरोधी बन चुका है फलित ज्योतिष शास्त्र?

....बता रहा था कि मिथुन राशि की लड़कियों के अन्दर सेंस ऑफ ह्यूमर की कमी होती है तो मिथुन राशि के लोग इन्हें पत्नी कभी न बनाएं। तुला राशि के लोगों को कन्या राशि की पार्टनर बिल्कुल नहीं चुनना चाहिए क्योंकि ये झगड़ालू होती हैं। वृश्चिक राशि के लोगों को मेष राशि का जीवनसाथी नहीं चुनना चाहिए क्योंकि वे स्वतंत्र किस्म की होती हैं, यानि इस राशि की लड़की खुली किताब की तरह है तो इन्हें वे आकर्षित नहीं करती हैं तथा मेष राशि के लोग कभी भी शर्मीली और झिझकने वाली महिलाओं को पसंद नहीं करते हैं। कुछ-कुछ इन्हीं तरीकों से यह महानुभाव समाज में मानसिक बीमारियाँ बेच रहे हैं। कोई और देश होता तो इन्हें कब का पागलखाने भेज चुका होता लेकिन यहाँ तो ऐसे लोग ऐसी स्वरचित कहानियाँ बेचकर सम्मान और दौलत कमा रहे हैं।.....

कहते हैं प्रकृति हर पल सुंदर रचनाएं नवश्रृंगार करती रहती है और मनुष्य भी अपनी सुविधा के लिए नित नए आविष्कार करता चला जा रहा है। लेकिन इन दोनों के बीच एक झूठ भी पलता रहता है जिसे किस्से कहानियां बनाकर वेद आदि धार्मिक ग्रंथों का हवाला देकर, लोगों की समस्याओं को दूर करने तथा मनोकामनाओं को पूरा करने के नाम पर हर रोज उनके सामने परोसा जा रहा है। विडम्बना देखिये लोग इसे स्वाद अनुसार चख भी रहे हैं।

आप सुबह उठिए, बगल में थोड़ी सी आस्था और विश्वास दबाकर टी. वी. खोलिए या अखबार के पन्ने पलटिये आपका भाग्य आपके सामने होगा। मसलन खबर यही होगी कि 'क्या कहते हैं आपके सितारे' त्रिपुंड लगाये एक पंडित बैठा होगा जो आपका भाग्य आपको बता रहा होगा यानि आज आप अमुक दिशा से जायें, इस रंग के कपड़ें पहने, किस पर विश्वास करें और किस पर नहीं, जीवन आपका है पर सुबह उठते ही इसका निर्धारण कोई दूसरा कर रहा होता है।

बात यहीं तक ही सीमित नहीं रहती अभी कई दिन पहले देखा तो एक कथित ज्योतिषी महिलाओं के नाम के आधार पर उनके अन्दर हीनभावना, भय और अन्धविश्वास तक परोसकर एक किस्म से मानसिक उत्पीड़न कर रहा था। पहले उसका शीर्षक समझिये 'ऐसी लड़कियों के साथ बिल्कुल ना करें शादी वरना सालभर में तलाक पक्का, साथ में घर भी होगा बर्बाद।' बता रहा था कि मिथुन राशि की लड़कियों के अन्दर सेंस ऑफ ह्यूमर की कमी होती है तो मिथुन राशि के लोग इन्हें पत्नी कभी न बनाएं. तुला राशि के लोगों को कन्या राशि की पार्टनर बिल्कुल नहीं चुनना चाहिए क्योंकि ये झगड़ालू होती हैं। वृश्चिक राशि के लोगों को मेष राशि का जीवनसाथी नहीं चुनना चाहिए क्योंकि वे स्वतंत्र किस्म की होती हैं, यानि इस राशि की लड़की खुली किताब की तरह है तो इन्हें वे आकर्षित नहीं करती हैं तथा मेष राशि के लोग कभी भी शर्मीली और झिझकने वाली महिलाओं को पसंद नहीं करते हैं। कुछ-कुछ इन्हीं तरीकों से यह महानुभाव समाज में मानसिक बीमारियाँ बेच रहे हैं। कोई और देश होता तो इन्हें कब का पागलखाने भेज चुका होता लेकिन यहाँ तो ऐसे लोग ऐसी स्वरचित कहानियाँ बेचकर सम्मान और दौलत कमा रहे हैं।

एक दूसरा ज्योतिष बता रहा था कि कुछ लोग शादी का निर्णय जल्दबाजी में कर लेते हैं, इस कारण परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। अगर आप अपनी ही राशि का जीवनसाथी चुनते हैं तो आपको जिंदगी भर कष्ट झेलने पड़ेंगे क्योंकि जब आपकी राशि संकट में होगी तो आपका पार्टनर भी संकट में रहेगा। जबकि अन्य राशि में शादी करने से ऐसा नहीं होगा। क्या कमाल का तर्क है मुझे नहीं पता इससे बड़ी मूर्खता क्या होती होगी कि जीवन में संकट नाम के आधार पर आते हैं लेकिन दु:ख का विषय यह है कि लोग आज के भारत में किस तरह इन लोगों की आजीविका का साधन बने हुए हैं। मशहूर लेखक शेक्सपीयर ने भले ही कहा हो कि नाम में क्या रखा है गुलाब को यदि गुलाब न कह कोई दूसरा नाम देंगे तो क्या उस की खुशबू गुलाब जैसी नहीं रहेगी? लेकिन उन्हें क्या पता था कि आगे चलकर नाम से ही लाखों करोड़ों का व्यापार खड़ा हो जायेगा।

जबकि एक रिश्ते को संवारने में दोनों तरफ से कई सारी कोशिशों की जरूरत होती है और कई सारी चीजों को ध्यान में रखने की। ऐसे में किसकी राशि क्या है, उतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता है। लड़का हो या लड़की नाम तो कुछ ना कुछ होगा ही क्योंकि हम नाम भविष्य के निर्माण या वैवाहिक संबंधों के लिए नहीं रखते। नाम किसी भी इन्सान को पुकारने के लिए, संबोधन के लिए होता है। यदि हम आचार-विचार, व्यवहार सोच और शिक्षा आदि गुण छोड़कर नाम और राशि के हिसाब से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने लगें तो मुझे नहीं लगता संसार में हमसे बड़ा कोई पागल इस दुनिया में होगा।

सम्पूर्ण विश्व में जहाँ लोगों की सुबह प्रार्थना उपासना और ईश्वर भक्ति के साथ शुरू होती है वहां भारत में आजकल लोगों की सुबह इनकी ठगविद्या की गिरफ्त में जकड़ी जा रही है। भले ही आज हम मंगल पर यान भेज रहे हैं, लेकिन मांगलिक दोष से हमारा पीछा नहीं छूट रहा है। हम मंगल पर जा सकते हैं ये विज्ञान और टैक्नोलॉजी का विषय है लेकिन मंगल हम पर या हमारे जीवन पर कोई असर करता है इस अंधविश्वास से कमाई का विषय जरूर है।

अभी तक लोगों ने सिर्फ मांगलिक दोष के बारे में जाना होगा इसके अलावा भी इनकी जेब में कुंडली मिलान से सम्बन्धित अनेक योग हैं जिनको दोष का नाम देकर ज्योतिषियों ने समाज मे बिना बात का भय व्याप्त कर रखा है। ऐसा ही एक योग है विषकन्या योग जिसे विषकन्या दोष भी कहा जाता है। इस योग पर भी मांगलिक दोष की तरह ही विवाह से पूर्व विचार किया जाता है लेकिन इस दोष को केवल स्त्री की कुंडली में ही देखा जाता है। यानि सिर्फ विषकन्या ही पैदा होती है विष पुरुष नहीं। इन्होंने इसके लिए एक श्लोक भी घड़ रखा है विषयोगे समुत्पन्ना मृतवत्सा च दुर्भगा। वस्त्राभरणहीना च शोकसंतप्तमानसा अर्थात् विषकन्या योग में जन्म लेने वाली स्त्री के प्रजनन अंगो में विकृति होती है और वह मृत सन्तान को जन्म देती है तथा वस्त्रों आभूषणों से महरूम होकर मन से दुखी होती है।

अब सवाल यही है कि ये ठग जिस किसी बहन बेटी को विष कन्या घोषित करते होंगे उसके मन पर क्या बीतती होगी? कुछ लोग सोच रहे होंगे ये सारी कमियां धर्म में हैं तो मैं बता दूँ ये विकृतियाँ धर्म में नहीं हैं बल्कि आपके भय में है। समस्त सृष्टि का जन्मदाता ईश्वर है ये हमारी आस्था है यही हमारा मूल धर्म है। किन्तु ईश्वर है और वह मेरी सभी भौतिक सामाजिक मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए देवस्थानों या मूर्तियों, पोथी पत्रों इत्यादि में वास करता है ये अंधविश्वास है। आज सांसारिक लोगों की सामान्य लालसाओं और अपेक्षाओं को जानते हुए कई लोगों ने अंधविश्वास की बड़ी-बड़ी दुकानों को रच दिया। हालत तो ये हो गई कि ईश्वर उपासना के महत्त्व से ही हम बहुत दूर निकल आए। इस कारण इन दुकानदारों के हम सिर्फ ग्राहक बनकर रह गये। भजन हवन ईश्वर के गुणगान करने के तरीके हैं और उस परमशक्ति का जितना गुणगान किया जाए उतना कम है, लेकिन अगर इस सबके द्वारा घर, गाड़ी, पदोन्नति आदि की चाह है तो ये न पूजा है न ही भजन यह भी हमें स्वीकार करना चाहिए कि जिन बातों का कोई तुक नहीं दिखाई देता उनका पल्ला पकड़ के रखना घोर अंधविश्वास है शायद इसी कारण टी.वी. और सड़क पर बैठा एक ज्योतिषी आपके भाग्य का विधाता बन बैठा है। क्या यह धर्म विरोधी नहीं है!

– ***सम्पादक***

जिन्ना ! अब तो भारत छोड़ो

....कैंपस में बढ़ती धार्मिकता यूनिवर्सिटी के बौद्धिक माहौल के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। दिल्ली से बीजेपी सांसद महेश गिरी कह रहे हैं कि पाकिस्तान में लाला लाजपत राय की मूर्ति को 1947 में तोड़ दिया गया, फादर ऑफ लाहौर सर गंगाराम की मूर्ति को लाहौर में तोड़ दिया गया, करांची हाईकोर्ट में महात्मा गांधी की मूर्ति बचाने के लिए उसे इंडियन हाईकमीशन में शिफ्ट करना पड़ा तो जिन्ना की तस्वीर वहां पर लगाने की क्या जरूरत है?...

जिन्ना को मजहब चाहिए था हमें राष्ट्र, जो जिन्ना कहता था कि हिन्दू-मुस्लिम कभी भाई-भाई नहीं हो सकते वह जिन्ना इस देश की विरासत क्यों? क्या अब जिन्ना को उसी के पाकिस्तान नहीं भेज देना चाहिए? ये याद दिलाने की बात है कि पाकिस्तान का आंदोलन ए एम यू कैंपस से ही शुरू हुआ था। यहीं पढ़े लिखे मुसलमानों ने एकजुट होकर मुसलमानों के लिए अलग देश की मांग की आवाज उठाई थी। एक बार फिर पाकिस्तान के जनक मोहम्मद अली जिन्ना की तस्वीर को लेकर हुए बवाल एवं लाठीचार्ज के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय चर्चा का विषय बना। ए एम यू की ओर से कहा जा रहा है कि विश्वविद्यालय के स्टूडेंट यूनियन हॉल में जिन्ना की तस्वीर साल 1938 से लगी हुई है, जब जिन्ना को आजीवन सदस्यता दी गई थी। ये आजीवन मानद सदस्यता ए एम यू स्टूडेंट यूनियन देता है। पहली सदस्यता महात्मा गांधी को दी गई थी। बाद के सालों में डॉ. भीमराव आंबेडकर, सी.वी. रमन, जय प्रकाश नारायण, मौलाना आजाद को भी आजीवन सदस्यता दी गई। इनमें से ज्यादातर की तस्वीरें अब भी हॉल में लगी हुई हैं। ऐसे में सवाल ये है कि 80 साल बाद ए एम यू में जिन्ना की तस्वीर पर बवाल क्यों हो रहा है?

जिस अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय में आज डॉ. अब्दुल कलाम, वीर अब्दुल हमीद, अशफाकउल्ला खां की तश्वीर होनी चाहिए थी वहां आज जनसंघ के नाम और सरकार के विरोध पर जिन्ना को पूजा जा रहा है। जो लोग आज मासूमियत से बवाल की वजह पूछ रहे हैं या तो उन्होंने भारत का इतिहास नहीं पढ़ा या जानबूझकर सच जानना नहीं चाहते या फिर से जिन्ना की बंटवारे की विचारध ाारा को बल देना चाहते हैं। मोहम्मद अली जिन्ना की वजह से देश दो हिस्सों में बंट गया था। लाखों लोग बेघर हुए, लाखों का कत्ल हुआ, लाखों महिलाओं की अस्मत को तार-तार किया गया पाकिस्तान के नाम का जख्म भारत के बाजु में दिया जो लगातार 70 वर्षो से युद्ध, आतंक और हिंसा के नाम से रिस रहा है।

सन् 1875 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बनाने के पीछे सर सैय्यद अहमद खाँ की एक खास सोच थी। उन्होंने मुस्लिम समुदाय में वैज्ञानिक और तार्किक सोच पैदा करने के लिए इसकी नींव रखी थी। लेकिन लगता है ए एम यू के प्रसाशन इसके संस्थापक सर सैय्यद की सोच से अलग हटके जिन्ना की विचाधारा को तरजीह देकर यहाँ से इंजीनियर और डॉक्टर के विपरीत फिर से बंटवारे की फौज खड़ी करना चाह रहे हैं। जरूरी नहीं कि शुरू में बंटवारा जमीन का हो-हाँ एक विचाधारा जब मजबूत होती है तो अंत में बंटवारा जमीन का ही होता है।

लेखक और विचारक तुफ़ैल अहमद लिखते हैं कि जब 80 के दशक में मैं अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पढ़ता था, तब एक भी लड़की बुर्का पहने नज़र नहीं आती थी, न ही किसी लड़के के सिर पर टोपी देखने को मिलती थी। उस दौर से आज तक में बहुत फर्क आ गया है। जो सामाजिक बदलाव हुआ है वह यही है कि छात्रों की जिंदगी में धर्म ने अच्छी-खासी जगह बना ली है। छात्रों में बढ़ता धार्मिक झुकाव, पूरी दुनिया के मुसलमानों की सोच में आ रहे बदलाव का ही एक हिस्सा है। कई बार कोई लिबास सिर्फ लिबास नहीं होता। उसी तरह बुर्का और टोपी भी एक विचार है इनकी अपनी राह और रंगत है।

असल में मुझे लगता है बात केवल जिन्ना की तस्वीर तक सीमित नहीं है वहां धर्मनिरपेक्षता की आड़ में बच्चों को जेहनी तौर पर इस्लाम की तरफ मोड़ा जा रहा है। उनके अन्दर एक विचारधारा खड़ी की जा रही है जो सन् 47 से पहले जिन्ना और समर्थकों ने खड़ी की थी कि मुसलमानों का धर्म अलग है वह सिर्फ शरियत से चल सकता है उसके लिए संविधान जैसी चीजे बेकार हैं। क्योंकि इस्लाम एक दर्शन, एक धर्म, विचारों की एक व्यवस्था, एक विचारधारा, एक तरह की राजनीति और एक तरह के विचारों का आंदोलन है। यह शांतिपूर्वक हो या हिंसक तरीके से, जो लोगों के जीवन पर शरिया के नियमों को लागू करना चाहता है।

तुफैल कहते हैं कि भारतीय सेना से रिटायर्ड ब्रिगेडियर सैय्यद अहमद अली ने 2012 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो-वाइस चांसलर (प्रति कुलपति) का काम संभाला था। सेना में 35 साल काम करने के बाद भी ब्रिगेडियर साहब उसकी धर्मनिरपेक्षता को आत्मसात नहीं कर पाए और पद पर आसीन होते ही ब्रिगेडियर अली ने भारतीय मुसलमानों को आरक्षण देने की मांग उठाई थी। इस सेमिनार में हिस्सा लेने आए सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील महमूद पार्चा ने कहा था कि भारतीय युवाओं को यह याद दिलाने की जरूरत है कि 1947 में धर्म के आधार पर देश के बंटवारे की नींव भी इसी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में रखी गई थी। चौंकाने वाली बात यह है कि 21वीं सदी में एक बार फिर भारत को बांटने की बात यहां से हो रही है। धर्म के आधार पर इस तरह की वकालत का नतीजा एक और बंटवारा ही होगा। दुख की बात यह है कि एक बार फिर ए एम यू इसका गवाह बन रहा है। ए एम यू में जो हालात बन रहे हैं उससे एक और बंटवारा टाला नहीं जा सकता और इसके लिए ब्रिगेडियर सैय्यद अहमद अली और उनके जैसी सोच रखने वाले वे लोग ही जिम्मेदार ठहराए जाएंगे जो आज जिन्ना की तश्वीर पर मौन साधे बैठे हैं या फिर सरकार और वीर सावरकर को निशाना बना रहे हैं।

एक बार फिर आज कैंपस में बढ़ती धार्मिकता यूनिवर्सिटी के बौद्धिक माहौल के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। दिल्ली से बीजेपी सांसद महेश गिरी कह रहे हैं कि पाकिस्तान में लाला लाजपत राय की मूर्ति को 1947 में तोड़ दिया गया, फादर ऑफ लाहौर सर गंगाराम की मूर्ति को लाहौर में तोड़ दिया गया, करांची हाईकोर्ट में महात्मा गांधी की मूर्ति बचाने के लिए उसे इंडियन हाईकमीशन में शिफ्ट करना पड़ा तो जिन्ना की तस्वीर वहां पर लगाने की क्या जरूरत है?

जिन्ना कोई नाम नहीं है बल्कि एक विचारधारा है। जो भाई को भाई से अलग करती है। जिन्ना हमारे देश की कोई विरासत नहीं है। हमें एक स्वतंत्र राष्ट्र चाहिए था लेकिन जिन्ना को इस्लाम। जिन्ना की मुस्लिम लीग ने ही 16 अगस्त 1946 को कोलकाता में 15 हजार लोगों को मार डाला था। इसलिए आजाद भारत में उनकी तस्वीर की कोई जगह नहीं है। ऐसे विवाद के समय किसी ने फेसबुक पोस्ट में सवाल किया है कि जो लोग आज जिन्ना की तश्वीर के लिए अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में मरने-मारने पर उतारू हैं तो सोचिये यदि जिन्ना के पाकिस्तान से युद्ध हुआ तो वह किसका साथ देंगे ?

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा — क्रान्ति-आन्दोलन और अस्त्र संग्रह

गतांक से आगे -

उस समय क्रान्तिकारियों के सामने अनेक समस्याएं थी। देश की अधिकांश जनता या तो राजनीतिक दृष्टि से अनभिज्ञ रहती थी या तटस्थ। राजनीति में दिलचस्पी रखने वाले अधिकांश व्यक्ति तो ब्रिटिश हुकूमत की दलाली करने में ही अपनी शान समझने लगे थे। स्वतंत्रता की इच्छा रखने वाले अधिकांश व्यक्ति भी अहिंसावादी हो चुके थे।

ऐसी हालत में एक ओर मुट्ठी-भर क्रान्तिकारी थे, तो दूसरी और सबल ब्रिटिश सत्ता और उसके गुर्गे इनसे जूझने के लिए क्रान्तिकारियों को 'माउज़र' पिस्तौल की सख़्त ज़रूरत महसूस होने लगी। जर्मनी की बनी इस छोटी और सक्षम पिस्तौल का आज भी जवाब नहीं। उस सस्ते ज़माने में, जब एक रुपये का 18-20 सेर दूध, 30 सेर गेहूँ, डेढ़-पौने दो सेर शुद्ध घी और 20-22 रुपये का तोला सोना उपलब्ध था, 'माउज़र' की क़ीमत 75 रुपये थी, और चोरी से 300 रुपये में मिलती थी। पंडित रामप्रसाद 'बिस्मल' ने एक 'माउज़र' पिस्तौल तीन सौ रुपये में ही ख़रीदी थी।

अतः प्रश्न उठा इन पिस्तौलों को जर्मनी से हासिल करने का। क्यों न किसी साथी को जर्मनी भेजा जाए? इस संदर्भ में यह बताना निहायत ज़रूरी है कि शचीन्द्रनाथ बख्शी तैराकी संघ के मंत्री थे और काशी में उन्होंने लम्बी तैराकी प्रतियोगिता का श्रीगणेश किया था। लम्बी तैराकी में उनका जवाब नहीं था। दल के अन्य कुशल तैराक थे केशव चक्रवर्ती। संस्था की ओर से चक्रवर्ती को सब कुछ समझा-बुझाकर तैराकी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए जर्मनी भेज दिया गया।

केशव चक्रवर्ती जर्मनी से सही-सलामत वापस लौट आए। उन्होंने कई अदद 'माउज़र' पिस्तौल भेजने की व्यवस्था जर्मन कार्गो से कर ली थी। उन दिनों भारत आने वाले जहाज़ों का विवरण कलकत्ता के 'स्टेट्समैन' अंग्रेज़ी दैनिक के कॉमर्शियल पेज पर शिपिंग इंटेलिजेन्स कालम में प्रकाशित होता था। शचीन्द्रनाथ वख़्शी उत्सुकतापूर्वक नज़र रखते थे इसी कालम पर यह देखने के लिए कि आखिर उनका जहाज़ आ कब रहा है?

कुछ दिनों बाद जुलाई 1925 के अन्तिम सप्ताह में उक्त जहाज़ की ख़बर पढ़ते ही उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही। लगभग एक महीने का समय था कनसाइनमेण्ट आने में और इसी बीच उसे छुड़ाने के लिये रुपये-पैसे का बन्दोबस्त भी करना था, जिससे समुद्र के अन्दर तीन मील जाकर जहाज़ से माल की डिलीवरी भी वहीं 'इंटरनेशनल वाटर्स' में ले लेनी थी। *- क्रमशः*

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :
क्रान्तिकारी आन्दालन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्देलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

पाकिस्तान के भूगोल में एक और लकीर की आहट

....जानकर लोग बताते है कि आतंकवाद को मिटाने के नाम पर पाकिस्तानी सेना ने पिछले कुछ वर्षों में उत्तरी-दक्षिणी वजीरिस्तान समेत अन्य क्षेत्रों में काफी अभियान छेड़े हैं। इन अभियानों में 20 लाख लोग विस्थापित हुए हैं एक किस्म से कहें तो पाकिस्तानी सेना ने अपने ही लोगों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया है।....

पिछले कुछ सालों में पाकिस्तान की राजधानी इस्लामबाद ने कई विरोध और धरना प्रदर्शन देखे हैं लेकिन इस बार का पश्तून आन्दोलन बिल्कुल अलग है जिसमें न कोई हिंसा है न पथराव सिर्फ कुछ मांग है और आन्दोलन में लगते नारों **'ये जो दहशतगर्दी है इसके पीछे वर्दी है'** ने पाकिस्तानी फौज और सरकार की साँस उखाड़ दी है। मंजूर पश्तीन की अगुवाई में पश्तून तहाफुज मूवमेंट (पी.टी.एम.) मात्र 22 लोगों द्वारा उठाई गयी आवाज अब लाखों लोगों का आन्दोलन बन चुकी है। ये पश्तून समुदाय के लोगों का गुस्सा है, उनको दशकों से प्रताड़ित किया जाना, संदिग्ध नीतियों के तहत हाशिये पर रखने और अफगानिस्तान में 'रणनैतिक पैठ' स्थापित करने की पाकिस्तान की मंशा के विरुद्ध आक्रोश की अभिव्यक्ति है यह घटना केवल खबर नहीं है बल्कि आने वाले समय में यह पाकिस्तान के भूगोल में एक और लकीर दिखाई दे रही है।

जैसे-जैसे मंजूर पश्तीन की आवाज लगातार मजबूत होती जा रही है वैसे-वैसे पाकिस्तान में बैचेनी पैदा हो रही है। हाल ही में पीटीएम से जुड़े कुछ लेखों को कई वेबसाइटों से हटा लिया गया। 14 अप्रैल को अंग्रेजी के एक बड़े अखबार 'द न्यूज' में वहां के स्तंभकार बाबर सत्तार ने एक लेख लिखा था लेकिन वह प्रकाशित नहीं किया गया। पश्तून आन्दोलन की खबर दिखाने पर जियो न्यूज को भी ऑफ एयर कर दिया गया था। बताया जा रहा है कि इस आन्दोलन की आग उस समय ज्यादा भड़क उठी जब कराची में 13 जनवरी 2018 को नाकीबुल्लाह महसूद नामक पश्तून युवक की बिना किसी न्यायिक कार्यवाही के हत्या कर दी गयी थी। नाकीबुल्लाह, दक्षिणी वजीरिस्तान के मकीन नामक फाटा क्षेत्र का निवासी था 23 वर्षीय नाकीबुल्लाह कपडे की दुकान चलाता था और मॉडल बनने का सपना रखता था। 3 जनवरी 2018 को उसे कुछ लोगों ने पकड़ा और दस दिन बाद एक फर्जी मुठभेड़ में उसकी हत्या कर दी।

यही नहीं पिछले दिनों एक पश्तून लीडर उमर खटक ने कुछ खुलासे किये थे जिनमें कहा गया था कि पाकिस्तान की सरकार आतंकी कैम्पों की फंडिंग के लिए पश्तून लड़कियों का यौन दासी के तौर पर इस्तेमाल कर रही है। उमर ने दावा किया था कि पाक फौज ने सैकड़ों पश्तून लड़कियों को किडनैप कर लाहौर में जिस्मफरोशी के काम में झोंक दिया है। उमर ने पाक फौज की पोल खोलते हुए ये भी बताया कि स्वात और वजीरिस्तान में अनगिनत घरों पर बुलडोजर चलवा दिया है और बाजारों को लूट लिया है। पाक सैनिक आए दिन पश्तून लड़कियों से रेप करते हैं। (यूनाइटेड नेशंस हाई कमिश्नर फॉर रिफ्यूजीज) के रिकॉर्ड्स के मुताबिक पाकिस्तान आर्मी के अत्याचारों से तंग आकर करीब 5 लाख लोग ये कहकर अफगानिस्तान पलायन कर गए कि पाकिस्तान कोई देश नहीं है, यह पश्चिमी साम्राज्यवादियों का एक प्रोजेक्ट है। यहाँ स्थानीय जातियों की पहचान खत्म की जा रही है। पाकिस्तानी फौज स्थानीय लोगों को उनके इलाके से बेदखल कर आतंकी कैम्प स्थापित करना चाहती है। पाकिस्तान हमें आए दिन परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकी देता है। पश्तून के लोग पाकिस्तान से अलग रियासत भी चाहते हैं।

जानकर लोग बताते है कि आतंकवाद को मिटाने के नाम पर पाकिस्तानी सेना ने पिछले कुछ वर्षों में उत्तरी-दक्षिणी वजीरिस्तान समेत अन्य क्षेत्रों में काफी अभियान छेड़े हैं। इन अभियानों में 20 लाख लोग विस्थापित हुए हैं एक किस्म से कहें तो पाकिस्तानी सेना ने अपने ही लोगों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया है। बारूदी सुरंग लगाने, कर्फ्यू लगाने से लेकर सम्पूर्ण फाटा क्षेत्र में अतिरिक्त सुरक्षा पोस्ट लगाने जैसे गैर-वाजिब कदम उठाये गए है। पाक सेना द्वारा पश्तूनों का इस्तेमाल महज अपनी भू-रणनैतिक मंशाओं को पूरा करने के लिए चारे के स्वरुप कर रही है उन्हें उनकी जमीनों से विस्थापित किया गया और हर स्तर पर उनका दमन और निरादर किया गया है।

देखा जाये तो ये विद्रोह तो काफी पुराना था लेकिन आज युवा पश्तून पाकिस्तान के शहरी केन्द्रों में पढ़ाई करते हैं, विशेषकर कराची और लाहौर में और उन्होंने व्यक्तिगत रूप से पक्षपात् का अनुभव किया है। इससे एक प्रकार की राजनैतिक चेतना का प्रवाह हुआ है जो पिछले वर्षो में पश्तूनों के साथ हुए अन्याय के विरुद्ध राजनैतिक मंशा पर सवाल उठाये। अपहरण, मुकदमे, हत्याएं और सैन्य बालों द्वारा ही यातना के विरोध में यह सब लोग एकजुट हुए। मंजूर पश्तीन कहते हैं कि आदिवासी लोगों को चरमपंथियों जैसा समझा जाता रहा है। आज फाटा से 8 हजार लोग सेना द्वारा गायब किये गये है। महिलाओं, बच्चों और बूढों पर भी सेना कोई रहम नहीं करती। हम लोग पाक हकुमत से रोजगार, अस्पताल, स्कूल या रुपया पैसा नहीं मांग रहे हैं बस अपने जीवन की भीख मांग रहे है। हमारी जिन्दगी पाक फौज के जूतों के नीचे दबी है। लेकिन जो भी पाक फौज पर सवाल उठाता है वह मार दिया जाता है। वे कहते हैं कि पिछले दिनों मौलवी मेराजुदीन ने पाक फौज पर सवाल उठाया था लेकिन इसके तीन दिन बाद उनकी हत्या हो जाती है। आतंकवाद की जंग में हमारा इस्तेमाल टिशु पेपर की तरह किया जा रहा है। कभी हमला हमसे करवाते हैं तो कभी हमलावर बताकर हमारे ऊपर ही बमबारी कर दी जाती है।

वैसे इतिहास गवाह है कि पश्तूनी क्षेत्र के लोगों को जबरन नियंत्रण में रखना कभी संभव नहीं रहा। पाकिस्तान के पश्तून समूहों पर कोई भी पूरी तरह अंकुश नहीं लगा पाया। ना सिर्फ पाकिस्तान और अफगानिस्तान बल्कि ब्रिटिश और अमरीकियों ने भी जब ऐसी कोशिशें कीं तो उन्हें उल्टा नुकसान उठाना पड़ा। फिलहाल तो पीटीएम पाकिस्तान के अलग-अलग शहरों में रैलियां कर रहा है, लोगों को अपने समर्थन में जुटा रहा है और अपनी मांगों को पुरजोर तरीके से रख रहा है। अब यह देखना बाकी है कि यह आंदोलन पाकिस्तान की राजनीति को किस तरह प्रभावित करता है। पश्तूनी समुदाय के मन में खिंची ये लकीर नक्शे पर उभरती है या फिर अमानवीय तरीकों से दबा दी जाती है।

पुस्तक परिचय

महर्षि दयानन्द की शिक्षा पद्धति में अनेक क्रांतिकारी देन हैं जिनका प्रभाव आधुनिक पद्धति पर भी पड़ा है। महर्षि इस युग के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने 'सबके लिए अनिवार्य शिक्षा' का विधान किया था और 'मानवमात्र को शिक्षा का समान अधिकार' की क्रान्तिकारी घोषणा करके उसको क्रियान्वित कर दिखाया। असमाानता के विषभरे जातिवादी वातावरण में ''पाठशालाओं में सबके साथ समान व्यवहार, समान रहन-सहन, खान-पान'' आदि का उद्घोष करने का साहस दिखाने वाले वे अकेले शिक्षाशास्त्री हुए हैं। उन्होंने सबसे पहले सार्वजनिक रूप से सन् 1874 में सत्यार्थ प्रकाश में 'स्वदेशीयता' और 'स्वदेशीय राज्य' के श्रेष्ठ होने की घोषणा कर पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति का विचार सर्वप्रथम दिया था और शिक्षा में विदेशी विद्वानों के प्रति बढ़ते अनावश्यक मोह से देशवासियों को सावधान किया था। इतना ही नहीं भारतीयों को स्वयं चक्रवर्ती राजा बनने के लिए प्रोत्साहित किया था, जिसे उस समय अंग्रेजी शासन के प्रति खुला विरोध कहा जा सकता है। शिक्षा क्षेत्र के सभी पहलुओं को स्पर्श करती डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी द्वारा रचित पुस्तक 'महर्षि दयानन्दवर्णित शिक्षा पद्धति' को जरूर पढ़ें तथा अपने ईष्ट-मित्रों को पढ़ने के लिए दें।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मातृशक्ति

मयोभुवः

जिस गृहस्थ आश्रम को हमने दु:ख मय समझ रखा है। वेद ने उसका पहला ही गुण यह बताया है कि हमारे गार्हस्थ्य जीवन सुख, शान्ति तथा आनन्द के देने वाले हों। यदि हमारे गृहस्थ सुख, शान्ति और आनन्द के जन्मदाता न होते, प्रत्युत आजकल की विचारधारा के अनुसार पूर्ण दु:खमय ही होते तो वेद गार्हस्थ्य जीवन का ऐसा सुन्दर वर्णन न करता। अब प्रश्न होता है कि हमारे यह घर सुख, शान्ति और आनन्द के जन्मदाता कैसे हों। गार्हस्थ्य जीवन को सुखमय बनाने का उपाय क्या है? ऊपर बताया जा चुका है कि ये गृहस्थाश्रम ही मानव जीवन रूपी कल्प वृक्ष के धर्म, अर्थ काम और मोक्षरूपी इन चारों मधुर फलों को प्रदान करने वाला है। अत: गृहस्थाश्रम में रहकर इन चारों फलों के प्राप्त करने का पूर्ण प्रयास करना ही अपने गार्हस्थ्य जीवन को परम सुखमय बनाना है। जो गृहस्थ इनकी प्राप्ति का प्रबल प्रयत्न नहीं करता वह कदापि अपने गार्हस्थ्य जीवन में सुख और शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता। इसीलिए प्राचीन ऋषियों ने इन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति पर बहुत बल दिया है और इन्हें न केवल गृहस्थाश्रम का प्रत्युत सारी वैदिक सभ्यता का आधार माना है, तथा इन्हें प्राप्त कर लेना ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य बताया है। अत: यही आर्य संस्कृति की आधारशिला है। इन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में ही मानव जीवन की सभी अभिलाषाएं अन्तर्भूत हो जाती है। इन कामनाओं को लेकर इस मानव जीवन का विश्व में सृजन हुआ है। - ***क्रमशः***

- आचार्य भद्रसेन
साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

दिल्ली के प्रमुख आर्य संगठनों की बैठक सम्पन्न

दिल्ली सभा, केन्द्रीय सभा, दयानन्द सेवाश्रम संघ, प्रान्तीय आर्य महिला सभा एवं सभी वेद प्रचार मंडलों - पूर्व, पश्चिम, उत्तर-पश्चिमी, दक्षिण दिल्ली के अधिकारीगण हुए शामिल

सभी के सहयोग से 2012 से भी भव्य होगा 2018 का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : विशेष जिम्मेदारी के लिए तैयार रहे दिल्ली- सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

अतिथियों की सेवा एवं सत्कार हमारा सौभाग्य - महाशय धर्मपाल, महासम्मेलन स्वगताध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोकि 25 से 28 अक्टूबर 2018 को आयोजित होना है हेतु आरम्भिक विचार-विमर्श, आपसी तालमेल, मूलभूत संयोजक व स्वागत कमेटी एवं तैयारियों के सन्दर्भ में वृहद बैठक का आयोजन 13 मई 2018 को आर्य समाज हनुमान रोड में किया गया। बैठक में श्री सुरेश चन्द्र जी ने कहा कि आर्यजन वेद प्रचार हेतु आधुनिक माध्यमों से भारत के आर्यजनों की ओर से अपेक्षा रखते हैं कि उन्हें भजनोपदेशक व प्रचारक उपलब्ध होंगे और आर्य महासम्मेलन में उनसे वह कुछ वेद ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे और भविष्य में स्थानीय आयोजन हेतु उपलब्ध हो सकेंगे। साथ ही महासम्मेलन की विशेष तैयारियों के लिए दिल्ली के आर्य जनों को अभी से तैयार रहना होगा। महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि इस आर्य महासम्मेलन में 36 देशों से आर्य बन्धु आएंगे व विभिन्न देशों में जो आर्य आयोजन हो रहे हैं उनकी झलक भी वह इस महासम्मेलन में प्रस्तुत करेंगे। भारत वर्ष के हर राज्य से भी बहुत बड़ी संख्या में आर्य सदस्य परिवार सहित इस महा आयोजन में सम्मिलत होंगे जोकि लगभग 3 लाख से ऊपर ही होंगे। हमें हर महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के स्वागत-सत्कार, मान- सम्मान व सुविधाओं का भी ध्यान रखना होगा ताकि चिरकाल तक इसकी छाप सभी के मन पर बनी रहे। सुविधाओं की दृष्टि से इस बार का आयोजन परिपूर्ण हो ऐसा हमारा प्रयास होना चाहिए।

महाशय धर्मपाल जी के मन के उद्गार हैं कि हमें स्वागत करने में, व्यवस्थाओं में आराम दायक व उच्च दर्जे के आयोजनों व कार्यक्रमों में कोई त्रुटि नहीं रखनी है। देश-विदेश से आने वाले आर्य संस्थाओं के न केवल पदाधिकारियों का ध्यान रखाना है बल्कि हर सदस्य का मान-सम्मान भी करना है। अतिथियों की सेवा एवं सत्कार हमारा सौभाग्य है। इसके लिए हमें कोई कोताही नहीं बरतनी होगी।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने आह्वान किया कि ये आयोजन दिल्ली में होना है सभी के सहयोग से 2012 से भी भव्य होगा चाहिए 2018 का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन इसके लिए दिल्ली के आर्य साथियों हमें अभी से तैयारी आरम्भ करनी होगी ताकि छोटी-बड़ी सभी सुविधाओं में किसी भी तरह की कमी न रह जाए। ये दिल्ली के आर्य जनों के स्वाभिमान का प्रश्न है। हमें तन-मन-धन से हर मनमिटाव को भुलाकर इसे सफल करना होगा यही हमारा प्रथम ध्येय होगा।

श्री प्रकाश आर्य जी ने सभा को सजग करते हुए कहा कि पिछले महासम्मेलनों की तरह इस बार यह सम्मेलन महत्त्व पूर्ण तो होगा ही पर बहुत सारी विशेष कारणों से अधिक महत्त्वपूर्ण भी होगा। अत: हमें योजनाबद्ध तरीके से विशेष ध्यान व मेहनत करनी होगी। ताकि जो लोग इसमें भाग लेवें व जानकारी लेवें व उनके मन पर अमिट छाप पड़े व छोड़े। सभी आए हुए पदासीन आर्य सज्जनों ने न केवल व्यक्तिगत दायित्व लिया बल्कि अपनी आर्य समाज, सभा व संस्था के भी सभी अधिकारियों व सदस्यों का भी हर सम्भव योगदान देने का उत्तर दायित्व लिया ताकि ये आर्य महासम्मेलन सफल व स्मरणीय हो सके। अंत में सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने कहा कि हर कार्य योजना का एक कार्ययोजक होता है जोकि हर पल, हर कोण से हर व्यवस्था को उच्चतम स्तर तक गतिशील करता है हमारे विनय आर्य वही कार्ययोजक हैं प्रभु उनको स्वस्थ व आयु देवे ताकि वे असम्भव आर्य कार्ययोजनाओं को सम्भव करते हुए उन्हें क्रियाशील कर सकें। सभी उपस्थित सदस्यों ने तालियों से श्री विनय आर्य जी का आभार प्रकट करते हुए उन्हें प्रोत्साहित व सम्मानित किया।

आर्य युवा नेता दानवीर भामाशाह महाशय धर्मपाल जी, सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी व महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल, उपप्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य व श्री शिव कुमार मदान, मंत्री श्री अरुण प्रकाश आर्य, श्री सत्यानन्द आर्य (एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल), आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, उपप्रधन श्री विक्रम नरूला, श्रीमती उषा किरण, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्री अजय सहगल, महामंत्री श्री सतीश चड्ढा, मंत्री श्री हरिओम बंसल, श्री एस.पी. सिंह, पूर्व मंत्री श्री अभिमन्यु चावला, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रकाश कथूरिया व मंत्राणी श्रीमती रचना आहूजा, आर्य विद्या परिषद से श्रीमती वीणा आर्य व श्रीमती तृप्ता आर्या, वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री बलदेव सचदेवा (पश्चिमी दिल्ली) श्री सुरेन्द्र आर्य (उत्तर पश्चिम दिल्ली) श्री ओम प्रकार यजुर्वेदी दक्षिणी दिल्ली श्री अशोक गुप्ता पूर्वी दिल्ली, श्री राज कुमार अग्रवाल (आर्य समाज न्यू मुल्तान नगर) श्री ओ. पी. घई आर्य समाज विकासपुरी बी ब्लाक ने विचार-विमर्श हेतु अनौपचारिक बैठक में भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियों के लिए दिल्ली के आर्य संगठनों की बैठक की अध्यक्षता करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी एवं श्री सत्यान्द आर्य जी। बैठक में उपस्थित विभिन्न संगठनों के अधिकारीगण।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने बैठक में शामिल होने पर सभी का धन्यवाद किया व पूरी शक्ति से आयोजन को सफल बनाने का आश्वासन देने पर साधुवाद भी कहा। - ***सतीश चड्ढा, महामंत्री***

Veda Prarthana - II Regveda - 9

Deatr God May I Relate to All Living Beings in a Friendly and Loving Manner

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

यजुर्वेद 36/18

Drite driham ma mitrasya ma chakshusha sarvani bhootani samikshantam. Mitrasya aham chakshusha sarvani bhootani samikshe.
Mitrasya chakshusha samikshamahe.

- Yajur Veda 36:18

God in this Veda mantra states O human beings! See and relate to, not only other human beings, but also all living creatures with love, kindness and as a friend because all living things have a purpose in the world. In the modern world selfishness and ignorance have so overpowered most human bings that they not only mistreat their actual enemies and perceived enemies but even they do not respect or treat with love their relatives, friends or neighbors. The result is that there are millions of court cases, many even among brothers, parents and children, husband and wife. Dear God! What a ridiculous state of human affairs it has become that children born to same mother and father, with same blood ties, for the sake of a little land or the gain of limited wealth fight with each other in the courts for years as enemies. Where have all of the ideal values of being generous, sacrifice, tolerance, patience, and ability to face hardship in life have disappeared in the modern world? "The predominant goals have become me and fulfillment of my selfish desires and to hell with the needs of others, relatives, neighbors, the village, society or the nation." Such shortsighted selfish animal like desires and tendencies have become the norm in the society all over the world.

Many persons these days instead of aiming to become a generous deva person or even as ordinary manushya human being have instead become worse than animals in their behavior, and in Vedic scriptures are called rakshas, pishach or daitya. Whereas an animal searches, hunts or kills for food, the latter group of bad people spend their valuable time in planning and executing their goals whereby one human being tries to push other down, deceive, exploit hurt or kill others for the fulfillment of their vices. So many persons these days instead of having love, trust, faith, caring or friendliness for other human beings are trapped in the quicksand of fulfillment of ill desires, degrading practices or vies at the cost of harming others. The result is that there is prevailing fear in the society about personal safety and lack of trust in others. People are afraid about their personal security, chareacter smear and losing wealth. This all has resulted in some communities an atmosphere of violence, terror and suffering.

Vedas, in contrast to what is stated in the above paragraph, recommend that human beings should have friendly attitude and behavior not only towards other human beings but also for all living things. Because of lack of true spiritual knowledge we have lost our wisdom to recognize that animals who like us have eyes, ears, nose, mouth, hearts, belly, other body parts, move and run like us, are also alive, conscious and have souls like us. The result is that we have no hesitancy in the cruelty of killing them for the pleasure of tasting and eating their meat. If one were to visit a slaughterhouse or a butchering place, one can clearly see and hear the painful crying and heart wrenching suffering of the innocent animals. Most human beings would likely stop eating meat if they were to personally witness the crying and suffering of animals in a slaughterhouse.

- Acharya Gyaneshwarya

Dear God true faith in You destroys people's selfish, jealousy and hateful tendencies. Dear God it is our prayer to You, to help us inspire and guide those persons who are selfish, jealous, angry, cruel, who hurt and kill or terrorize others to change their ways so that they get rid of their dad and vicious tendencies and turn into generous normal human beings. May, among people, this false feeling of superiorty over others who are different than us disappear. May our feelings of dislike or hatred of others who belong to different race, language, or religion, have different worship rituals be extinguished. Instead, may there be feeling of respect, kindness and love for other human beings as well as animals, birds, insects and other living beings. May we have friendly attitude towards all and cruel feeling for none.

Dear God bless us so that everywhere in the world all living beings can live in atmosphere of peace, fearlessness and freedom and nowhere there be sorrow and suffering. May everywhere there be friendship, love, trust, respect, kindness, and brotherly or sisterly affection for others. With Your grace even those in past were cruel and hurt others may now offer help to others and promote life and liberty.

Deva are those persons who are always doing good for mankind and the universe. They are the embodiment of virtue or dharma. They are generous persons; they give to others without expecting anything in return.

Manushya means a person(s) who lives and behaves like a normal human being who treats others with respect and considers their joys or sorrows like his/her own. manushya embodies an average person who is a mixture of both good and bad, he/she may be self-centered but does not harm others in achieving his/her goal.

To Be Continue....

1100 कुण्डीय विराट यज्ञ सम्पन्न

दिल्ली की वायु पर्यावरण शुद्धि एवं भारतीय नववर्ष के उपलक्ष्य में 5 हजार वर्षो के इतिहास में पहली बार जीव रक्षणि प्रीत फाउंडेशन एवं पतंजलि युवा भारत दिल्ली के तत्त्वावधान में रोहिणी दिल्ली में 1100 कुण्डीय विराट यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस शुभअवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को पीतवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस समारोह के मुख्यवक्ता दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री डॉ. योगानन्द शास्त्री जी थे। आचार्या सूर्य देवी जी के ब्रह्मत्व एवं आर्य तपस्वी सुखदेव जी एवं अनेक गणमान्य विद्वानों, समाजसेवियों के पावन सानिध्य में यह समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। - ***डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया***

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्म दिवस सम्पन्न

आर्य समाज राम नगर, रुड़की एवं आर्य उपवन रुड़की में विश्व वैदिक विद्वान पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्म दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। समारोह का शुभारम्भ स्वास्तिक महायज्ञ से हुआ। यज्ञ यजमान श्री अरविन्द मिनोचा जी थे। कार्यक्रम संयोजक श्री तेजपाल सिंह आर्य पूर्व उपाध्यक्ष आर्य समाज रामनगर रुड़की, हरिद्वार उत्तराखण्ड ने कार्यक्रम को सफल बनाने के सभी कार्यकर्ताओं व आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

-तेजपाल सिंह आर्य, पूर्व उपाध्यक्ष

आओ ! संस्कृत सीखें — अनुवाद — 53

गतांक से आगे....

पौत्र: दोलायां दोलायते।
=पोता झूले में झूलता है।
पितामह: पौत्रं पश्यति।
= दादाजी पोते को देखते हैं।
पौत्र: वेगेन दोलायते ।
= पोता तेज झूलता है।
पितामह: भीत: भवति।
= दादाजी डर जाते हैं
पितामह: - वत्स! दोलां मन्दं कुरु।
= बेटा! झूला धीमा करो।
पौत्र: न मन्यते। = पोता नहीं मानता है।
पितामह: पुन: आदिशति।
= दादाजी फिर से आदेश देते हैं।
पौत्र: न मन्यते। = पोता नहीं मानता है।
पितामह:-त्वं न मन्यसे चेत् अहं गृहं गच्छामि। = तुम नहीं मानते हो तो मैं घर जाता हूँ।
पौत्र: शीघ्रमेव दोलां मन्दं करोति।
= पोता जल्दी से झूला धीमा करता है।
अवतीर्य पितामहं निवेदयति।
= उतरकर दादाजी को निवेदन करता है
न पितामह! अधुना वेगेन न चालयिष्यामि।
= नहीं दादाजी ! अब तेज नहीं चलाऊँगा।
भवान् गृहं मा गच्छतु।
= आप घर मत जाईये।
एक होरा अनन्तरं गृहं चलिष्याव:।
= एक घंटे के बाद घर चलेंगे।
एतद् मम अस्ति। = ये मेरा है ।
एतद् मम पुस्तकम् अस्ति ।
= यह मेरी किताब है ।
एतद् तव अस्ति। = ये तुम्हारा है ।
एतद् तव युतकम् अस्ति ।
= यह तुम्हारी कमीज है ।
एतद् भवत: / भवत्या: अस्ति ।
= ये आपका है ।
एषा भवत्या: शाटिका अस्ति ।
= ये आपकी साड़ी है ।
एष: भवत: कञ्चुक: अस्ति ।
= ये आपका कुर्ता है ।
एतद् कस्य अस्ति? = ये किसका है

- क्रमश: -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग — इकलौता पुत्र न रहा

पूज्यपाद श्री स्वामी सत्यप्रकाशजी पूर्वी अफ्रीका की वेद प्रचार यात्रा पर गये। एक दिन एक पादरी ने आकर कुछ धर्मवार्ता आरम्भ की। स्वामीजी ने कहा कि जो बातें आपमें और हममें एक हैं उनका निर्णय करके उनको अपनाएँ और जो आपको अथवा हमें मान्य न हों, उनको छोड़ दें। इसी में मानवजाति का हित है। पादरी ने कहा ठीक है।

स्वामीजी ने कहा, ''हमारा सिद्धान्त यह है कि ईश्वर एक है।''

पादरी महोदय ने कहा, ''हम भी इससे सहमत हैं।'' तब स्वामीजी ने कहा, ''इसे कागज पर लिख लो।''

फिर स्वामीजी ने कहा, ''मै, आप व हम सब लोग उसी एक ईश्वर की सन्तान हैं। वह हमारा पिता है।''

श्री पादरीजी बोले, ''ठीक है।''

श्री स्वामीजी ने कहा, ''इसे भी कागज पर लिख दो।''

श्री पादरीजी ने लिख दिया। फिर स्वामीजी ने कहा-जब हम एक प्रभु की सन्तानें हैं तो नोट करो, उसका कोई इकलौता पुत्र नहीं है, यह एक मिथ्या कल्पना है। पादरी महाशय चुप हो गये।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

गूगल, फेसबुक और व्हॉट्सअप पर आर्य समाज के सिद्धान्तों को जानकर आर्य समाजी बना

मैं ओमदीप गुप्ता पुत्र श्री सुभाष चंद गुप्ता आर्य समाजी एक मजबूती के रूप में अपने क्षेत्र में खड़ा हूं । एक समय था जब मेरी बुद्धि खराब हो गई थी क्योंकि मैं अन्य मत आदि का समर्थक हो गया था लेकिन मैंने समझदारी से काम लिया और मैंने दआर्यसमाज डॉट ओआरजी इत्यादि लिंक पर खोज चालू की और अंजली आर्य, प्रतिभा आर्य,आर्य समाज इत्यादि को गूगल पर, फेसबुक पर, यू-ट्यूब पर और व्हाट्एप्प पर भी सिर्फ आर्य समाज के सिद्धान्तों के बारे में खोजना चालू कर दिया। आर्य समाज के सिद्धान्तों को जानने का परिणाम यह हुआ कि आज मैं स्वयं ओमदीप गुप्ता जोकि अपने पिता द्वारा प्रदत्त आर्य समाजी संस्कारों से विमुख हो गया था वापस आर्य समाज में आ गया। हमारे घर में प्रतिदिन यज्ञ होता है और कोई भी पाखंड अंधविश्वास को हमारे घर में जगह नहीं है। मेरे पिताजी पूर्व से ही आर्य समाज के सदस्य व आर्य समाज के प्रचारक रहे हैं लेकिन मैं ही अपने पथ से विमुख हो गया था जोकि सोशल मीडिया के द्वारा वापस आर्य समाज में पूर्ण जोश के साथ वापस आ गया और 'ओमदीप गुप्ता से ओमदीप आर्य बन गया हूं।'

मेरे पिताजी श्री सुभाषचंद आर्य, को देखकर मेरे विचार इतने परिवर्तित हो गए कि आज मैं अपने पिता की इकलौती पुत्रवधू को भी आर्य समाजी ही चाहता हूं। अभी मैंने विवाह नहीं किया है। मैं चाहता हूं कि मैं अपना विवाह एक आर्यसमाजी परिवार की बेटी से करूं जिसमें आर्य समाजी विचार कूट कूटकर भरें हों और आने वाली संतति आर्य समाजी ही पैदा हो। – ***ओमदीप आर्य, गोविंदगढ़, अलवर (राजस्थान)***

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस स्तम्भ में उन महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ लिखें अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी और भेज दें aryasabha@yahoo.com पर ईमेलं। आप हमें अपनी कहानी और फोटो डाक द्वारा भी भेज सकते हैं। हमारा पता है– **सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित
नैतिक शिक्षा की पुस्तकें
नर्सरी से 12वीं कक्षा तक
आकर्षक छूट 25%
बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 4 से 17 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद
प्रवेश शुल्क 500/-रुपये (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **ऋषिपाल आचार्य, संयोजक, मो. 09811687124**

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आरत्मरक्षण शिविर

7 मई से 3 जून,18 : आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज इलाहाबाद (उ.प्र.)
विस्तृत जानकारी के लिए श्री पंकज जायसवाल शिविराध्यक्ष मो. 9415365576 सम्पर्क करें – **-साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका**

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

37वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 17 से 27 मई, 2018

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में 37वां वैचारिक क्रांति शिविर 17 से 27 मई 2018 स्थान आर्यसमाज, मेज बाजार, रानी बाग, दिल्ली-34 में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्घाटन 17 मई सायं 6 बजे, संकल्प दिवस 20 मई प्रात: 10 बजे एवं समापन समारोह रविवारर 27 मई 2018 प्रात: 10 बजे होगा। – **आचार्य दया सागर, मुख्य शिविर संयोजक**

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 3 से 10 जून 2018, एम.डी.एच. इंटरनेशनल स्कूल द्वारका सै.6
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- **श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372**

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

– ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

विश्वकल्याण महायज्ञ एवं वेद मन्दिर निर्माण

आर्य समाज महरौनी, ललितपुर के तत्त्वावधान में 4 दिवसीय विश्व कल्याण यज्ञ, सत्संग एवं आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन 21-24 मई, 2018 तक सी.बी. गुप्ता इंटर कॉलेज, महरौनी में आयोजित किया जा रहा है। प्रवचन प. विष्णुमित्र वेदार्थी एवं भजनोपदेश पं. कुलदीप आर्य के होंगे। – ***लखन लाल आर्य, मन्त्री***

गुरुकुल हेतु आचार्य चाहिए

महाशय धर्मपाल जी के आशीर्वाद, सार्वदेशिक सभा के सहयोग से आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के अन्तर्गत बर्मा में में बनने वाले गुरुकुल के लिए सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है। गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि से शिक्षण प्राप्त आचार्य महानुभाव जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषा पर समानाधिकार रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र, बायोडाटा, योग्यता आदि प्रमाण पत्रों एवं पासपोर्ट की फोटो प्रति '**मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर भेजें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें- ***विनय आर्य, उपमन्त्री***

राष्ट्र का करें सम्मान
हिन्दी का बढ़ाएं मान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा के संयुक्त के तत्त्वावधान में

नि:शुल्क योग साधना एवं सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 मई से 3 जून 2018 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष **सत्यार्थ प्रकाश** का स्वाध्याय कराया जाएगा। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 800 रुपये है। लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 27 मई 2018 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 3 जून 2018 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखवीर सिंह आर्य, शिविर संयोजक,
मो. 09350502175, 09540012175, 07289850272, 9540040324

सोमवार 14 मई, 2018 से रविवार 20 मई, 2018
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17/18 मई, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 मई, 2018

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वि जन्मशताब्दी समारोहों के शुभारम्भ के रूप में आयोजित होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018 दिल्ली

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018

वर्ष 2018 के महासम्मेलन से अगले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन 2024 दिल्ली तक विभिन्न देशों में होंगे महासम्मेलन और जनजागृति कार्यक्रम

विश्व की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट करें तथा इन तिथियों में आपना कोई भी आयोजन न रखें और दल-बल सहित अधिकाधिक संख्या में महासम्मेलन में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा इस सूचना को विभिन्न माध्यम से प्रचारित करें।

प्रतिष्ठा में,

जुड़िए आर्यसमाज फेसबुक से जोड़िए अपने मित्रों को और दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

Arya Sandesh
www.facebook.com/samajaryasandesh
फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

Arya Samaj Facebook
www.facebook.com/arya.samaj
फेसबुक : आर्यसमाज

Vedic Prakashan
www.facebook.com/vedicparkashan
फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी जन्म शताब्दी समारोह

दिनांक : 10 जून 2018 (रविवार)
समय : दोपहर 3 बजे से सायं 7 बजे
स्थान : मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, अनेक ग्रन्थों के रचियता स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के 100वें जन्मदिवस पर समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह में आर्य जगत के गणमान्य साधु-संन्यासी, राजनेता, आर्य समाजों के पदाधिकारीगण पधारकर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा के साथ उनके पुण्य कार्यों का स्मरण करेंगे।

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं स्वामी दीक्षानन्द जी के कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करें।

निवेदक

धर्मपाल आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री) विद्यामित्र ठुकराल (कोषाध्यक्ष)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

श्रद्धानन्द शर्मा (अध्यक्ष) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भटनागर (महासचिव)
समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद

94 साल की उम्र में भी जब मेरे दांत ठीक रह सकते हैं तो आपके क्यों नहीं ?

एम डी एच
दंत मंजन
लौंग युक्त
(बिना तम्बाकू के)

23 जड़ी बूटियों एवं अन्य पदार्थों से निर्मित आयुर्वेदिक दंत मंजन

यह दंत मंजन ही नहीं दांतों का डाक्टर है।

महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा0) लि0

इसके सुबह - शाम नियमित प्रयोग से दांतों का दर्द, पायेरिया, मुंह की दुर्गन्ध, मसूड़ों की सूजन, रक्त बहना, ठण्डा गरम पानी लगना, दांतों में जमी मैल छुड़ाने के लाभ के साथ-साथ दांत सारी उम्र चलें, पूरी तरह सुरक्षित व मजबूत रहें।

इसे नीचे बताई गई प्रयोग विधि अनुसार एक सप्ताह नियमित रूप से इस्तेमाल करें और फर्क महसूस करें। फायदा न होने पर पैसे वापस पायें।

प्रयोग-विधि सबसे पहले मुलायम टूथ ब्रश से दांतों में मंजन करें। उसके बाद थोड़ा मंजन बायें हाथ की हथेली पर डालकर अपने दायें हाथ की उंगली से दांतों और मसूडों पर आहिस्ता-आहिस्ता मलें। दांतों के अंदर के हिस्से को भी अपने अंगूठे से मलें। रात को सोने से पहले, सुबह उठने के बाद। अगर दांतों में दर्द होता हो तो दांतों में मंजन करके 10 मिनट के बाद थूक दें, कुल्ला न करें।

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
फोन नं० 011-41425106-07-08
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

शाह जी दी हट्टी
दुकान नं० 6679, खारी बावली,
दिल्ली-110006 फोन नं० 011-23991082

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह